ऋण मुक्ति कारक 108 दिव्य प्रयोग

By 💖 Prakash Ji 💖

कुछ चुनिंदा प्रयोग के साथ

1. किसी भी शुक्ल पक्ष कि शुक्रवार से शुरू करते हुए रात्रि काल में अगर मां भगवती लक्ष्मी का पूजन करके । 41 शुक्रवार तक श्री सूक्त का पाठ किया जाए तो सदा सदा के लिए आजीवन के लिए आर्थिक तंगी दूर हो जाता है दरिद्रता का निवारण हो जाता है.... अगर कुंडली में महा दरिद्र्य योग है तो वह भी निष्प्रभावी रहता है । कर्ज से निश्चित रूप से मुक्ति मिल जाती है ।इस प्रयोग के बीच हर शुक्रवार शिव दर्शन करना अनिवार्य है ।

2.नवग्रहसूक्तम् का 10000 पाठ से केवल कर्ज से मुक्ति नहीं अपितु और भी बहुत प्रकार के समस्या से व्यक्ति मुक्त हो जाता है । आजीवन के लिए उसे अद्भुत सुरक्षा कवच की प्राप्ति होती है

जिसका लाभ उसके जीवन के हर मोड़ पर उसे देखने को मिल जाएगा। सोमवार के दिन से अथवा रविवार के दिन से प्रारंभ करें। सावन की महीना में अगर कर पा रहे हैं तो इससे अच्छा कुछ हो ही नहीं सकता। शिव दर्शन अनिवार्य है।

3. किसी भी महीना की शुक्ल पक्ष की गुरुवार के दिन से प्रारंभ करते हुए गजराज को बचाते हुए भगवान विष्णु की प्रतिमूर्ति अथवा फोटो चित्र के सम्मुख अगर गजेंद्र मोक्ष स्तोत्र का अर्तभाव से पाठ कियाजाए... तथा कर्जभार से मुक्ति हेतु उन्हें प्रार्थना किया जाए... और उसके साथ ही साथ "ओम नमो नारायणय" महामंत्र का यथाशक्ति एक माला अथवा तीन माला अथवा पांच माला अथवा साथ माल अथवा 11 माला अथवा 21 माला रोज जाप किया जाए....सात्विक आहार

बिहार किया जाए , तो 1 महीने के अंदर ही व्यक्ति के जीवन में चमत्कार देखने को मिल जाएगा । हर प्रकार से व्यक्ति सुरक्षित हो जाएगा । आर्थिक तंगी दूर हो जाएगा । ऋण भार से व्यक्ति मुक्त हो जाएगा.... कर्ज से मुक्ति का अनेक प्रकार की रास्ता खुल जाएगा ।

4. अगर कोई व्यक्ति विशेष विधि विधान नहीं जानता है फिर भी अगर किसी शिवालय में बैठकर शिवलिंग के समक्ष... 3 महीने के अंदर अगर 10000 की मात्रा में स्कंद महापुराण मेंवर्णित ऋणहर्ता मंगल स्तोत्र का पाठ कर ले तो.... आकस्मिक रूप से व्यक्ति को धनराशि मिलना शुरू हो जाता है जिसके सहायता से व्यक्ति कर्जभार से मुक्त हो जाता है । व्यक्ति का रुका

हुआ काम ,अटका हुआ कार्य भी बनने लग जाता है ।

5.ॐभूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर. भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ॐभूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन् आ नो भजस्व राधसि

हे अधिक दान करने वाले परमात्मा इंद्र! हमें बहुत सा धन दो. थोड़ा मत दो तुम हमें बहुत धन देना चाहते हो,हे वृत्रनाशक एवं शूर इंद्र! तुम बहुत से यजमानों में अधिक देने वाले के रूप में प्रसिद्ध हो तुम हमें धन का भागी बनाओ. (२१)

यह ऋग्वेद के इंद्र मंत्र है । इंद्र सहित इंद्राणी का पूजन करते हुए अगर नित्य इसका भक्ति भाव से जाप किया जाए । जप की संख्या कम से कम

10000 से ज्यादा हो । शुद्ध गाय की घी,त्रिमधु से अगर 1008 बार हवन किया जाए तो निश्चित रूप से आर्थिक तंगी से व्यक्ति मुक्त हो जाता है.... सभी और से आर्थिक रास्ता खोलने लग जाता है.... व्यक्ति ऋण भार से मुक्त हो जाता है । अगर कोई हवन नहीं कर पा रहा है तो इसका केवल जाप से भी पूर्ण रूप से लाभ की प्राप्ति होता है । खराब से खराब आर्थिक स्थिति को यह दिव्य मंत्रराज सुधार देता है ।

6. जिनका जन्म मेष लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं... वह भगवान विष्णु को । तुलसी की पत्ते की माला चढ़ाएं , गजेंद्र मोख्य स्त्रोत से संपूटित विष्णु सहस्त्रनाम नाम का नित्य पाठ करें ।

7.जिनका जन्म वृष लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं... तो वहां किसी शुक्ल पक्ष की शुक्रवार से प्रारंभ करते हुए नित्य प्रतिदिन इंद्र सहित इंद्राणी का पूजन करें ।ॐभूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर. भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ॐभूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन् आ नो भजस्व राधसि यह मंत्र का जितना हो सकेगा उतना जाप करें ।

8.जिनका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं... हो संकल्प पूर्वक या तो तुलसीदास कृत सुंदर कांड का पाठ करें या फिर वाल्मीकि की रामायण अंतर्गत सुंदर कांड का पाठ करें । अध्यात्म रामायण का भी सुंदर कांड का पाठ कर सकते हैं ।

9.जिनका जन्म कर्कट लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं... तो वेदज्ञ ब्राह्मणों को भोजन वस्त्र आदि प्रदानकरें, कुल पुरोहित कुलगुरु को दान धर्म आदि करें वस्त्र भोजन आदि प्रदान करें । संपूर्ण रामचरितमानस का संकल्प सहित पाठ करें । अध्यात्म रामायण को भी संकल्प सहित पाठ करने से निश्चित रूप से ऋणमुक्ति होजाएगा ।

10.जिनका जन्म सिंह लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं... तो हो संकल्प सहित दुर्गा सप्तशती का विधीबद्ध अनुष्ठान करें । अगर यह नहीं कर सकते हैं तो चंडिका हृदय स्तोत्र का संकल्प सहित

10000 संख्या में पाठ करें। निश्चित रूप से ऋण मुक्ति होगा।

11.जिनका जन्म कन्या लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं...तो बटुक भैरव सहस्त्रनाम का नित्य पाठ करना शुरू कर दें। कम से कम 1 महीने के अंदर 2 महीने के अंदर या फिर 3 महीने के अंदर 1000 पाठ तो जरूर करें। जीवन भर कभी कर्जभार से पीड़ित नहीं होंगे। और इसका और भी बहुत सारे लाभ व्यक्ति को मिलता चला जाएगा।

12.जिनका जन्म तुला लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं...तो वह किसी भी शुक्ल पक्ष की गुरुवार से प्रारंभ करतेहुए श्रीमद् भागवत महापुराण में

बनी त्रिवक्रम वामन अवतार की कथा का पठन करना प्रारंभकर दें । निश्चित निश्चित निश्चित रूप से लैस मिलेगा । व्यक्ति कर्ज भार से मुक्त हो जाएगा ।

13.जिनका जन्म वीछा लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं...तो हनुमत् सहस्त्र नाम का कम से कम 1000 पाठ करें ।

14.जिनका जन्म धनु लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं...तो कनकधारा स्तोत्र का काम से कम 1008 पाठ संपन्न करें ।

15.जिनका जन्म मकर लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं...तो दुर्गा सहस्त्रनाम की प्रत्येक नाम से मां दुर्गा का पूजन करें। कम से कम 3 महीना करें। प्रत्यक्ष चमत्कार देखकर हत चकित रह जाएंगे।

16.जिनका जन्म कुंभ लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना चाहते हैं...तो चंद्रशेखर स्तोत्र का विधिबद्ध संकल्प सहित 10000 अनुष्ठान संपन्न करें। 10000 अनुष्ठान के लिए 3 महीना समय ले सकते हैं। आवश्यकता अनुसार उसे भी ज्यादा समय ले सकते हैं। पर प्रभाव प्रत्यक्ष रहता है।

17.जिनका जन्म मिन लग्न में हुआ है... अगर वह ऋण रोग तथा दरिद्रता यह तीनों से मुक्त होना

चाहते हैं...तो सूर्य अष्टोत्तर शतनाम का विधिबद्ध 10000 अनुष्ठानसंपन्न करें । यहां पर भी 10000 अनुष्ठान के लिए 6 महीना समय यह ले सकते हैं । पर इसका भी प्रभाव अति चमत्कारिक रहता है ।

18. जगतगुरु आदि शंकराचार्य के द्वारा रचित सर्वसिद्धिकर ऋणमोचन नृसिंह स्तोत्र का 10000 पाठ से निश्चित रूप से व्यक्ति हर प्रकार के कर्ज से मुक्त हो जाता है । और बहुत ही कम दिनों में धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता है ।

19. विष्णु महापुराण में वर्णित इंद्र कृत लक्ष्मी स्तोत्र कीपाठ से आर्थिक तंगी दूर हो जाता है । कर्ज मुक्ति भी हो जाता है । 108 पाठ में साधारण लाभ 1008 पाठ में मध्यम लाभ तथा

10000 पाठ में उत्तम लाभ । पूरा परिवार के व्यक्ति विशेष अगर पढ़ते हैं पर पूरे परिवार की व्यक्ति विशेष की पढ़ने की संख्या अगर एक लाख हो जाता है तो सात पीढ़ी तक दरिद्रता नहीं आती है उस घर में..... यह एक सिद्ध प्रयोग है ।

20. गजेंद्र मोक्ष स्तोत्र को संपुटित करके श्रीमद् भागवत गीता का सातवां अध्याय का माहात्म्य सहित पाठ करने से पितृदोष से होने वाले ऋण भार कर्ज भार से व्यक्ति मुक्त हो जाता है ।

21. एक मंत्रात्मक हैरंव स्तोत्र मिलता है । खोजने पर बड़े आसानी से मिल जाएगा । विधीबद्ध अगर 10000 पाठ संपन्न कर दिया जाए । भले ही तीन महीना लग जाए । या फिर उससे भी ज्यादा समय लग जाए । पर इसका अगर विधीबद्ध पाठ

किया जाए तो हर प्रकार के दरिद्रता से व्यक्ति मुक्त हो जाता है । कर्ज भार से भी व्यक्ति मुक्त हो जाता है ।

22.ऋणहर्ता गणपति स्तोत्र भी बड़े आसानी से आपको मिल जाएगा । पहले 3 महीना अथवा 6 महीने के अंदर इसका 10000 पाठ करके इसको सिद्ध कर लें । अब इसका नित्य एक पाठ करने से व्यक्ति अगले 6 महीने के अंदर ही कर्ज भार से ऋण भार से मुक्त हो जाता है । केवल इतना ही नहीं बहुत जल्दी धनवान भी बन जाता है ।

23.ॐ अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम

'ये देवयाना: पितृयाणाश्च लोका: सर्वान् पथो अनृणा आक्षियेम ॥

इस दिव्य मंत्र राज का सवा लाख जब से निश्चित रूप से कर्ज मुक्ति हो जाती है ।ऋण मुक्ति हो जाती है । यह निश्चित है । दुर्गा सप्तशती में इसका संपूट लगाकर अनुष्ठान करने पर भी निश्चित रूप से फल लाभ होता है । संपूंट लगाकर सत चंडी का अनुष्ठान करने से.... करोड़ों का कर्ज भी हो प्राणी निश्चित रूप से कर्जभार से मुक्त हो जाता है ।

24."ॐ श्री मधुसूदन जय मधुसूदन जय मधुसूदन" इस मंत्र राज का अगर कर्ज मुक्ति का संकल्प लेकर ऋण मुक्ति का संकल्प लेकर 100000 की मात्रा में जाप कर लिया जाए.... तो डंके की चोट पर कहते हैं कर्ज मुक्ति हो जाएगा । मंत्र का जाप आर्त भाव से करें ।

25. गणेश जी को रोज "ओम गं गणपतये नमः" मंत्र जाप करते हुए 1008 दुर्वा चढ़ाएं तथा साथ में थोड़ा-थोड़ा सिंदूर भी चढ़ते जाएं । लगातार 41 दिन करने से निश्चित रूप से कर्ज से मुक्ति मिलजाएगा । इसका और भी बहुत सारे लाभ है ।

26. यह प्रयोग जल्दी ना करें, पर जब आपको लगे की और कोई चारा नहीं है तो जरूर करें, झारखंड में रजरप्पा धाम है । वहां पर माता छिन्नमस्तीका प्रत्यक्ष विराजमान करते हैं । वहां पर भैरवी नदी तथा दामदोर नदी आपस में एक दूसरे से मिले हैं । इस नदी से एक टुकड़ा पत्थर उठाएं । अपना कुल गोत्र अधिकार नाम लेते हुए अपने मनोकामना कहीं की मेरे इतना कर्ज है कर्ज भर से अगर तेरे कृपा से मुक्त हो जाऊंगा तो यह

पत्थर हटाने के लिए जरूर आऊंगा । यह कहते हुए संकल्प पूर्वक पत्थर को बांध दें । निश्चित रूप से आपका ऋण मुक्ति हो जाएगा । ऋण मुक्ति होने के बाद रजरप्पा धाम जाकर वह पत्थर को हटाएं। । वहां पर छागबली दें ।

27. एकांत में कोई अगर कुआं मिल जाए.... रोज सुबह जाकर उस कुआं का पूजन करें । रोज कच्ची दूध का धारा अर्पित करें थोड़ा सा सिंदूर के अंदर डाल दें । लाल गुड़हल का पुष्प उस कुआं के अंदर डालें... अंत में ₹1 का सिक्का डाल दें.... अपनी परेशानी कहीं परेशानी से मुक्ति के लिए प्रार्थना करें प्रणाम करें बिना पीछे देखे सीधा घर चले आएं.... लगातार 41 दिन करने से निश्चित रूप से कर्ज से मुक्ति मिल जाएगी अन्य कोई परेशानी होगा वहां से भी मुक्ति मिल जाएगी ।

28. हर 3 महीने में एक बार हर 6 महीने में एक बार रुद्राभिषेक करते रहने से भी धन संबंधीत परेशानी अपने आप खत्म होने लग जाता है आर्थिक तंगी दूर होती है । कर्ज मुक्ति होती है ।

29. एकांत में जहां बरगद का पेड़ हो वहां पर जाएं... प्रणाम आदि करके उसे बरगद का पेड़ का पूजन करें.... अंत में बस यह बोलें की... है हे यक्ष देवता आप मेरे सहायता करें । आपकी में शरणागत हूं । आपकी कृपा से कर्ज मुक्त हो । हर 7 दिन में एक बार नारियल वहां पर फोड़ें... अंतिम दिवस यानी की 41 में दिन पायस का भोग लगाएं । निश्चित रूप से आप बहुत जल्द ही यक्ष कृपा से कर्ज मुक्त होजाएंगे । इस अनुष्ठान के बीच

प्रतिदिन महादेव का दर्शन अनिवार्य है शिवलिंग का दर्शन अनिवार्य है ।

30. ललिता चालीसा का अगर 21 दिनों तक रोज 21 बार पाठ किया जाए तो अगर छोटी-मोटी कर्ज होगा तो उतर जाता है ।

31. खैर का लकड़ी से ओम् श्री लक्ष्मी नृसिंहाय नमः मंत्र राज से अगर नित्य 108 बार अथवा अगर ज्यादा कर्ज है तो नित्य 1008 बार हवन किया जाए तो निश्चित रूप से कर्ज मुक्ति होती ही है । हवन में साधारण घी ही लें ।

32. आपके ऊपर अगर कर्जा चढ़ गया है.... सदा इस बात का ध्यान रखें की आपके जो भाई-बहन है उनके साथ आप लड़ाई झगड़ा ना करें । अगर

लड़ाई झगड़ा कर चुके हैं तो अपनी ओर से अब शांत रहें । वह चाहे कितने भी बुरे हो पर उनकी विपक्ष में मत जाएं । अगर हो कुछ गलत किया है तो परमात्मा के ऊपर छोड़ दीजिए । और इसके साथ ही किसी शिव मंदिर में एक छोटा सा कार्तिकेय भगवान के प्रतिमूर्ति निश्चित रूप से दान में दें ।

33. पूर्ण भक्ति भाव से अगर कोई अगस्त्य कृत लक्ष्मी स्तोत्र का 1008 पाठ कर ले उसके बाद नित्य सुबह के समय एक बार मध्यकाल में एक बार तथा संध्या काल में एक पाठ कर ले, देखते देखते उसकी आर्थिक अवस्था ठीक होने लग जाएगा कर्ज होगा तो कर्ज मुक्त हो जाएगा ।

34. ५ गुलाब के फूल, १ चाँदी का पत्ता, थोडे से चावल, गुड़ लें। किसी

सफेद कपड़े में २१ बार गायत्री मन्त्र का जप करते हुए बांध कर जल में

प्रवाहित कर दें। ऐसा ७ सोमवार को करें। अगर कर्जा बहुत बड़ा नहीं होगा, 10 लाख के अंदर होगा..... तो यह प्रयोग निश्चित रूप से कर्ज मुक्ति में सहायक बनता है ।

35. मिट्टी में बजरंगबली का मूर्ति बनाएं , कर्ज मुक्ति का संकल्प लेकर मूर्ति के ऊपर राम राम कहते हुए सिंदूर चढ़ते जाएं । रोज 1008 बार ऐसा करना है 41 दिनों तक करना है । कर्ज मुक्ति हो जाएगी । इसके साथ सुंदर कांड का भी पाठ कर सकते हैं ।

36.घर के व्यक्ति विशेष अगर चीनी के बदले देसी गुड़ का उपयोग करने लग जाते हैं तो कर्ज की भार में निश्चित रूप से कमी आ जाता है ।

37.बुधवार के दिन स्नान पूजन पश्चात जो सर्वप्रथम गाय को हरा चारा

खिलाये उसके बाद ही खुद कुछ ग्रहण करें तो उसे शीघ्र ही कर्जे से

छुटकारा मिल जाता है।

38. आपकी कुंडली में अष्टम घर में जो भी ग्रह बैठे हैं या फिर अष्टम घर के जो स्वामी है उन्हीं के जो इष्ट देवता है उनका आराधना अगर आप करते हैं तो आकस्मिक धन प्राप्ति होता है और इसी के

प्रभाव से ही कर्ज से व्यक्ति को मुक्ति मिल जाती है ।

39. कुंडली में एकादश घर में जो ग्रह बैठा है... अथवा एकादश घर की जो स्वामी है उन्हीं के जो इष्ट देवी हैं.... अगर उनका आराधना किया जाए तो अनायास कर्ज से मुक्ति मिल जाता है ।

40. अगर रात्रि काल में राहु के उपासना किया जाए, राहु कवच को कम से कम 1000 से ज्यादा बार पाठ कर लिया जाए तो निश्चित रूप से कर्जा से मुक्ति मिलती है, आकस्मिक धन भी प्राप्त होता है । राहु की कृपा से व्यक्ति का जीवन आसान बन जाता है ।

41.बुधवार के दिन सवा पाव मूंग उबालकर उसमें घी और शक्कर

मिलाकर गाय को खिलाएं। अगर कर्जा की मात्रा कम है तो 7 बुधवार करें अगर कर्ज की मात्रा ज्यादा है तो 21 बुधवार करें,इससे जल्द ही कर्ज से मुक्ति मिलती है।

42.दुर्गाद्वात्रिंशन्नामावलि का 32000 अनुष्ठान करने से निश्चित रूप से ऋण मुक्ति हो जाता है । इसके अलावा अगर अन्य कोई संकट भी अन्य कोई समस्या भी प्राणी के जीवन में होगा तो उसका भी अंत हो जाता है ।

43. स्कंद महापुराण में वर्णित दुर्गा सहस्त्रनाम का संकल्प सहित 1000 अनुष्ठान करने से निश्चित

रूप से ऋण मुक्ति होता है ।

44. तंत्र राजतंत्र में एक दुर्गा सहस्त्रनाम स्त्रोत है । अगर कोई व्यक्ति संकल्प सहित 6 महीने के अंदर उस दुर्गा सहस्त्रनाम का 1008 पाठ कर पाए और इसके साथ ही नित्य घर में भगवती दुर्गा का पूर्ण भक्ति भावसे इसी शासहस्र नाम से पूजार्चना करे तो.... 1 साल के अंदर ही व्यक्ति का भाग्य बदल जाता है । निधन से निर्धन व्यक्ति धनवान हो जाता है कर्ज भार से मुक्ति मिलती है ।

45. ॐशरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।

सर्वास्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

यह दुर्गा सप्तशती का ही मंत्र है और हर कोई इसको जानते भी हैं। पर इसका एक रहस्य बता रहा हूं। अगर कोई व्यक्ति शरणागत होकर माता दुर्गा का पूजन पूर्वक कर्ज मुक्ति का संकल्प लेकर इसका एक लाख जाप करलें.... भले ही 6 महीना लग जाए.... निश्चित रूप से कर्ज मुक्ति हो जाएगा ऋण मुक्ति हो जाएगा।

46. ॐदुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या

सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥

यह मंत्र भी दुर्गा सप्तशती का ही है। इस मंत्र का भी एक लाख मात्रा में जब करने से ऋण मुक्ति होती है और साथ ही साथ सभी प्रकार से सभी

ओर से धन संपदा में वृद्धि होने लग जाता है । यह भी सिद्ध मंत्र है ।

47.ॐसर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ।

मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः

यह भी दुर्गा सप्तशती का ही मंत्र है । जिनका विवाह नहीं हुआ है या फिर विवाह तो हो चुका है पर संतान आदि नहीं हो पा रहा है ऊपर से कर्जभार से पीड़ित है.... और इसके साथ और भी बहुत सारी समस्या उसके साथ पहले से ही लग रहा है... अगर कोई ऐसा व्यक्ति है तो निश्चित रूप से यह मंत्र उसे अनुष्ठान के तौर पर लेना चाहिए । कम से कम 125000 का अनुष्ठान करें । निश्चित रूप से लाभ मिलेगा । शादी भी होगा शादी की बात अगर क्षमता नहीं है संतान भी प्रति होगा और

व्यक्ति कर्ज से भी मुक्त होगा और धन संपदाओं का अभाव भी नहीं रहेगा ।

48. जगद्गुरु आदि शंकराचार्य के द्वारा रचित कल्याण वृष्टि स्तोत्र का सर्वप्रथम 1008 पाठ कर लें । उसके पश्चात नित्य प्रतिदिन 16 पाठ करना शुरू कर दें । कर्ज मुक्ति भी होगा । आर्थिक तंगी भी दुर होगा । सभी ओर से धन संपदाओं की भी प्राप्ति होना शुरू हो जाएगा ।

49. हनुमान भक्त किसी भी मंगलवार के दिन से शुरू करते हुए रक्त चंदन से बनी हनुमान जी की मूर्ति का पूजन करें तथा उन्हें के सामने ही भक्ति भाव से "हैं पवन नंदनाय स्वाहा" का जाप करें । कम से कम 1 लाख जाप संपन्न करें । कोई भी मनोकामना मांगे । कर्ज मुक्ति का मांगेंगे तो कर्ज

मुक्ति भी होगा । जो इतने भी नहीं जब कर पा रहे हैं मात्र 10000 जाप करके देख लें ।

50. ॐधरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।

कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥

इस मंत्र राज का एक लाख की अनुष्ठान से निश्चित रूप से व्यक्ति कर्ज से मुक्त हो जाता है ।

51.ॐभूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।

वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु में कुजः।।

यह भी मंगल का ही मंत्र है इसका भी एक लाख की अनुष्ठान से कर्जभार से व्यक्ति मुक्त हो जाता है ।

52.ॐमहाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबल:।

अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी:।

आकस्मिक धन प्राप्ति तथा ऋण मुक्ति की संबंध में राहु को नकारा नहीं जा सकता । इस मंत्र राज का अगर एक लाख की संख्या में अनुष्ठान कर दिया जाए तो निश्चित रूप से आर्थिक मार्ग प्रशस्त हो जाता है आर्थिक तंगी दूर हो जाता है आकस्मिक धन प्राप्ति होने लग जाता है जिसके कारण व्यक्ति अपना कर्ज भार को खत्म करने में सक्षम हो जाता है ।

53.ॐअर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

इस मंत्र का भी अनुष्ठान संख्या 1 लाख है ।
कर्जभार से मुक्ति आर्थिक तंगी से मुक्ति ,
आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए यह सिद्ध मंत्र है ।
राहु मंत्र रात्रि काल में ही ज्यादा जाप करें ।

54."ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुम् नमः
फट्"इस मंत्र राज का शरणागत भाव से 1 लाख
से भी ज्यादा जाप कर लें । लाल रंग के दो हाथ
वाले गणेश जी का पूजा चना करें सिंदूर और
दुर्वाचढ़ाएं । 6 महीने के अंदर ऋण मुक्त हो
जाएंगे । धन संपदाओ का अभाव नहींरहेगा ।

55. चांदी में "श्रीं" बीज अंकित कीजिए । उसके
बाद किसी भी शुक्ल पक्ष की शुक्रवार से प्रारंभ
करते हुए कम से कम डेढ़ घंटा "श्रीं" बीज का
जाप करें । चांदी में खोदित "श्रीं" विज का नित्य

पूजा अर्चना करें । निरंतर 6 महीना तक करने से प्रत्यक्ष लाभ देखने को मिलेगा । ऋण भार से व्यक्ति मुक्त हो जाएगा । धन संपदा में बढ़त्तोरी होगी ।

56. संपूर्ण शरणागत भाव से अगर श्री जगतगुरु आदि शंकराचार्य के द्वारा रचित कालिका अष्टम का 10000 पाठ संपन्न किया जाए चाहे 1 साल में ही क्यों ना हो... तो निश्चित रूप से कर्जभार से मुक्ति मिलती है.... अगर अन्य कोई इच्छा होगा तो वह इच्छा भी पूरी होती है ।

57.ॐततश्चाविरभूत्साक्षाच्छ्री रमा भगवत्परा

रञ्जयन्ती दिशः कान्त्या विद्युत्सौदामनी यथा ।।

इस मंत्र राज का 125000 की मात्रा में अनुष्ठान से धन संपदाओं का प्राप्ति होती है आर्थिक तंगी दूर होती है ऋण भार से व्यक्ति मुक्त होता है । अनुष्ठान शुक्ल पक्ष की शुक्रवार की रात्रि से प्रारंभ करें ।

58."ॐ दुर्गा देवि शरणमहं प्रपद्ये प्रतिकूलं मे नश्यतु अनुकूलं में प्रयच्छतु स्वाहा ।"इस मंत्र राज की अगर 125000 की मात्रा में अनुष्ठान कर लिया जाए तो कर्ज मुक्ति के लिए बहुत सारी रास्ता खुल जाता है । आर्थिक जीवन अनुकूल हो जाता है ।

59. अर्धरात्रि कल में भद्रकाली सहस्त्रनाम का 1008 पाठ 3 महीना के अंदर करने से निश्चित रूप से कर्जभार से मुक्ति मिलती है । ध्यान देने

योग्य बात यहां पर यह है कि अपने अनुष्ठान को गुप्त रखना है ।

60. उत्तर दिशा की ओर मुख् करके काशी क्षेत्र का स्मरण करें । अब वहां पर ऋण मुक्तेश्वर महादेव हैं । उनका कोई फोटो प्रिंट निकाल कर अपने घर के उत्तर दिशा में स्थापित कर दें । हम उसी के समक्ष ही इसका नित्य 1008 बार जाप करें । लगातार 3 महीना तक करें । निश्चित रूप से ऋण मुक्ति होगा । प्राणी कर्ज भार से मुक्त हो जाएगा । मंत्र है ॐ ऋणमुक्तेश्वराय नमः ।

देव ऋण से मुक्ति-:

61.जो भी आपके इष्ट देव हैं उनका स्तुति स्तोत्र से जब आप उन्हें प्रसन्न करते हो तब आप देव

ऋण से मुक्त हो जाते हो ।

62. हर 3 महीने अथवा 6 महीने में रुद्राभिषेक करने से व्यक्ति देव ऋण से मुक्त हो जाता है ।

63. घर में सत्यनारायण भगवान का कथा करने से देव ऋण से मुक्ति मिलती है ।

64. रामायण कथा घर में बैठाने से तथा जनता जनार्दन को प्रसाद सेवन करवाने से दरिद्र भोजन करवाने से देव ऋण से मुक्ति मिलती है ।

65. घर में एक अंगुल का छोटा सा पार्थिव शिवलिंग का पूजन करके अगर शिव महापुराण का नित्य प्रतिदिन पाठ किया जाए तो देव ऋण से निसंदेह व्यक्ति को मुक्ति मिलती है ।

66. घर में दुर्गा सप्तशती का अनुष्ठान करवाने से देवऋण से मुक्ति मिलती है ।

67. प्रमाणिक देव मंदिरों का दर्शन करने के लिए जाने से निश्चित रूप से देव ऋण से मुक्ति मिलती है ।

68. देवी देवताओं के मंदिर निर्माण के लिए दान दक्षिणा देने से निश्चित रूप से देव ऋण से मुक्ति मिलती है ।

69. ऐसा कोई मंदिर जहां पर पूजा अर्चना बंद हो गई हो वहां पर जाकर पुजार्चना करने से देवरान से मुक्ति मिलती है ।

70.मंदिर के कार्य के लिए कोई विशेष वस्तु अथवा द्रव्य का दान भी देवऋण से व्यक्ति को मुक्त करवा देता है ।

पितृऋण से मुक्ति-:

71.श्रीमद् भागवत गीता के सातवें अध्याय का महात्म सहित पाठ से पितृऋण से मुक्तिमिलती है ।

72.अमावस्या के दिन ब्राह्मण भोजन करवाने से पितृऋण से मुक्ति मिलती है ।

73.ईश्वर गीता का पारायण से निश्चित रूप से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है

74.शिवलिंग पर गंगाजल अर्पित करने से निश्चित रूप से पितृऋण से मुक्ति मिलती है ।

75.पितरों की कृपा प्राप्ति हेतु पितृऋण से मुक्तिहेतु हर साल श्राद्ध करवाते रहें ।हरिवंश की कथा या तो श्रवण करें या फिर पठन करें ।

76.अपने घर की कुलदेवी कुलदेवता का नित्य प्रतिदिन पूजा अर्चना करते रहने से पितृऋण से मुक्ति मिल जाता है ।

77.घर का पहला रोटी गाय को, और महीने में जथा शक्ति कुछ दक्षिणा मंदिरको यह पितृऋण से व्यक्ति को मुक्त कर देता है ।

78. श्री सती का दक्ष घर में जन्म से लेकर पार्वती विवाह पर्यंत की कथा को पारायण करने से पितृऋण से व्यक्ति मुक्त हो जाता है। कुलदेवी भी प्रसन्न हो जाते हैं।

79.देवी महाभागवत मेंवर्णित श्री पार्वती गीता का नित्य पठन-पाठन से पितृऋण से मुक्ति मिल जाती है। कुलदेवी भी प्रसन्न हो जाते हैं।

80. पार्वती जन्म प्रसंग को पढ़ने से आर्थिक तंगी दूर हो जाती है, घर में मांगलिक कार्य होने लग जाता है, पितृऋण से भी मुक्ति मिल जातीहै, देव ऋण से भी मुक्ति मिल जाती है। कुलदेवी भी प्रसन्न हो जाते हैं।

ऋषि ऋण से मुक्ति-:

81.नित्य प्रतिदिन सप्त ऋषियों का नाम को स्मरण करें तथा उन्हें प्रणाम करें ।ऋषि ऋण से निश्चित रूप से मुक्ति मिलेगी ।

82. अपने श्री गुरुदेव को संतुष्ट रखें । उनके प्रसन्नता के कारण बनें । अन्न वस्त्र भोजन.... जैसे भी संभव हो उन्हें प्रसन्न रखने का कोशिश करें ।

83. कोई भी मंत्र जाप कर रहे हैं अथवा कोई भी स्तोत्र का पाठ कर रहे हैं तो इस मंत्र अथवा स्तोत्र का जो ऋषि है उनका पूजन पहले जरूर करें । पूजन नहीं कर पा रहे हैं तो कम से कम स्मरण जरूर करें ।

84.शिवालय में शिव दर्शन जरूर करें । ऋषियों का नाम को स्मरण करें । साधु संतों की सेवा करें ।

85. प्रभु कृपा से जो भी ज्ञान आपको मिला है ऋषि मुनियों का स्मरण करते हुए वही ज्ञान को लोक कल्याण के लिए अर्पित करें । ऐसा करने पर व्यक्ति ऋषि ऋण से मुक्त हो जाता है ।

86.ईश्वर गीता अथवा श्रीमद् भागवत गीता का नित्य प्रतिदिन एक श्लोक अथवा पांच श्लोक अथवा 11 श्लोक अथवा एक अध्याय निश्चित रूप से पठन करें ।ऐसा करने पर व्यक्ति ऋषि ऋण से मुक्त हो जाता है ।

87. भाद्रपद महीने में पढ़ने वाली ऋषि पंचमी का व्रत अवश्य संपन्न करें ।ऐसा करने पर व्यक्ति ऋषि ऋण से मुक्त हो जाता है ।

88.महाभारत के अनुशासन पर्व में पितामह भीष्म के द्वारा उपदेशित ऋषि मुनियों का नाम है । उसका नित्य स्मरण मात्र से ऋषि मुनियों का कृपा व्यक्ति के ऊपर बरसने लग जाता है ।व्यक्ति ऋषि ऋण से मुक्त हो जाता है ।

89.स्वयं के द्वारा जितना भी हो सके भले ही एक ब्राह्मण क्यों ना हो पर ब्राह्मण भोजन अवश्य करवाएं । अगर ब्राह्मण भोजन असंभव लग रहा है तो शिवालय को भोजन द्रव्य दान करें ।

90.श्री गुरु मूर्ति दक्षिणामूर्ति जी का उपासना से व्यक्ति गुरुऋण, देव ऋण, ऋषि ऋण आदि से मुक्त हो जाता है ।

91. मेष लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु भगवान विष्णु की किसी उग्र स्वरूप की सेवा करें । उदाहरण के तौर पर जैसे कि भगवान नरसिंह । इसी प्रकार भगवान विष्णु की और भी अनेक उग्र स्वरूप है उनमें से किसी का भी आराधना कर सकते हैं ।

92. वृष लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु दुर्गा सप्तशती में वर्णित भगवती महालक्ष्मी का आराधना करें ।

93. मिथुन लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु शिवपुत्र भगवान कुमार कार्तिकेय का आराधना करें। इसके अलावा भगवान हनुमान जी का उग्र स्वरूप का आराधना करें। भगवान हनुमान जी के पंचमुख स्वरूप के शरण में जाएं।

94. कर्कट लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु देवी गायत्री का आराधना करें। राजा सहस्त्रार्जुन का आराधना करें। विदोक्त इंद्र सूक्त से देवराज इंद्र को प्रसन्न करें। इनमें से कोई एक पद्धति अपने से भी कर्कट लग्न वाले जातक ऋण रोग तथा शत्रु आदि से सदा मुक्त रहते हैं।

95. सिंह लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु देवी काली का आराधना करें । माता काली का किसी प्रसिद्ध पीठ पर जाकर वहां पर वली प्रोषित कर सकते हैं.... अथवा कुष्मांड बली भी दे सकते हैं । इसके अलावा साधारण पूजार्चना भी कर सकते हैं ।

96.कन्या लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु माता काली का आराधना करें । माता काली का किसी प्रसिद्ध पीठ पर जाकर वहां पर नारियल अर्पित करें । माता महाकाली को काला रंग का साढी, काला रंग का चूड़ी, काला रंग का चुनरी, काजल आदि अर्पित करें । तथा ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें ।

97.तुला लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु भगवान श्री राम का आराधना करें । संकल्प सहित वाल्मीकि रामायण का पाठ करें । या फिर ऋण रोग तथा शत्रु आदि इनमें से जिसको भी मिटाना है । उसका नाश का संकल्प लेकर यह कहें कि अगर मेरा ऋण/ रोग /शत्रु का नाश हो जाने पर मैं बाल्मीकि रामायण का पारायण करवाऊंगी । ऐसा विधिबद्ध संकल्प लें । और यह संकल्प भी वहां पर ले जहां पर ऐसा अनुष्ठान हो रहा हो । अगर कहीं पर ऐसा अनुष्ठान नहीं हो रहा हो तो आप घर में भगवान श्री रामचंद्र महाराज जी का राज दरबार का प्रतिबिंब के सामने पंडित जी के द्वारा यह संकल्प लें । ऋण रोग तथा शत्रु इनमें से जिसका भी मुक्ति की कामना किए हैं अगर उससे आप

मुक्त हो जाएं तो आपको पारायण संपन्न करना ही पड़ेगा । ऐसा तीनों का नाश करने हेतु तीन बार कर सकते हैं । जो इतने सब नहीं कर पाएंगे उनको चाहिए कि वह केवल ही केवल बाल्मीकि रामायण का नित्य पाठ करें ... ऋण रोग तथा शत्रु नाश का संकल्प लेकर .... निश्चित रूप से फल प्राप्ति होगा ।

98.विछा लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु पंचमुखी हनुमान जी का आराधना करें । शिवपुत्र भगवान कार्तिकेय जी का जन्म कर्म का नित्य पठन करें । हनुमान जी का सिंदूर से अभिषेक करें । देवी कौमारी अथवा मां दुर्गा का सिंदूर से अभिषेक करें ।

99. धनु लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु विष्णुपत्नी श्री लक्ष्मी जी के अष्ट लक्ष्मी स्वरूप का आराधना करें । इसके अलावा दुर्गा सप्तशती में वर्णित परमेश्वरी जगदंबा की महालक्ष्मी स्वरूप का भी आराधना कर सकते हैं ।

100.मकर लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु अष्टभुजसंपन्न गरुड़ वाहन भगवान विष्णु का आराधना करें ।ऋण रोग तथा शत्रु मुक्ति का संकल्प लेकर महाभारत में वर्णित श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें ।

101.कुंभ लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु

माता उमा के शरण में जाएं। माता उमा की अन्नपूर्णा स्वरूप का आराधना करें । ऐसा करने पर हो निश्चित रूप से ऋण रोग तथा शत्रु आदि से जातक मुक्त हो जाएगा ।

102.मिन लग्न वाले जातक को चाहिए कि वह ऋण रोग तथा शत्रु आदि से मुक्ति प्राप्ति हेतु भगवान शिव के शरण में जाएं। भगवान शिव का महा रूद्र स्वरूप में आराधना करें । महामृत्युंजय मंत्र का विधिबद्ध अनुष्ठान करें । कभी सरसों के तेल से, कभी गान्ने की रस से, तथा कभी जल के साथ दूध मिलाकर, कभी साधारण जल में गंगाजल मिलाकर शिवलिंग का अभिषेक करें अपने भक्ति अनुसार ऐसा करने पर निश्चित रूप से ऋण रोग तथा शत्रु आदि से जातक मुक्त हो जाएगा ।

103.जिन व्यक्ति विशेष को अपना लग्न के बारे में पता नहीं है उन्हें चाहिए कि वह मीन लग्न वाले जातकों के लिए जो कहा गया है उसको संपन्न करें । मीन लग्न वाले जातक के लिए जो प्रयोग कहा गया है...वह सबके लिए प्रशस्त है ।

104. नित्य प्रतिदिन बिल्व वृक्ष के नीचे धन के कामना से दीपदान करें । लगातार 41 दिनों तक करके देखें निश्चित रूप से चमत्कारिक लाभ मिलेगा ।

105. हर महीने शिवलिंग पर सवा लीटर गन्ने का रस से शिवलिंग का अभिषेक करें.... ऐसा मात्र पांच बार करने से ही इसका चमत्कारिक लाभ आपको देखने को मिल जाएगा ।

106. कुत्तों के लिए यथाशक्ति भोजन, गायों के लिए रोटी अथवा अन्य कोई भोजन, शिवालय के लिए कुछ दान, हर 2 महीने 3 महीने में काम से काम ब्राह्मण भोजन चाहे हो एक ही ब्राह्मण ही क्यों ना हो, देवी मंदिर यात्रा करके देवी को पुष्प से साज्जित करना यह सब तीव्र लक्ष्मी दायक है ।

107. हर अमावस्या में घर को साफ करके घर में भगवती लक्ष्मी का पूजन करना रात्रि कल में भगवती लक्ष्मी के समक्ष दीपक जलाना निश्चित रूप से आर्थिक अभिवृद्धि कराने वाला है ।

108. सर्वप्रथम कम से कम 1008 बार शिव तांडव स्त्रोत को पठन कर लेना.... उसके बाद नित्य प्रतिदिन संध्या काल में शिवालय में जाकर

दीपक प्रज्वलित करने के बाद शिव तांडव स्तोत्र का भक्ति भाव से शिवलिंग की समक्ष... बेलपत्र तथा जल चढ़ाने के बाद पठन करना.... 41 दिनों के अंदर ही घनघोर दरिद्रता का अंत कराने वाला है । साथ ही साथ ब्रह्म ऋषि वशिष्ठ प्रोक्त दारिद्र दहन शिव स्तोत्र का अगर शिवालय में ही 1008 पाठ कर लिया जाए.... तो घनघोर दरिद्रता से पीड़ित व्यक्ति भी.... निर्धनता से मुक्त हो जाएगा, 3 महीने के अंदर हर प्रकार से आर्थिक तंगी दूर होकर वह व्यक्ति आर्थिक अभिवृद्धि को प्राप्त करेगा...... बिना संकोच के शंकर के शरण में जाओ तुम्हारा अवश्य शंकर होगा अर्थात कल्याण होगा.....इस पुस्तक का यह सबसे अंतिम और अचूक प्रयोग है । नमः शिवाय परमात्मने 🔱 ।

ऋण मुक्ति सफल प्रयोग-: by 💖 Prakash Ji 💖

आदरणीय प्यारे मित्रों तथा गुरुजन यहां पर मैं आज जो प्रयोग देने जा रहा हूं यह अपने आप में एक अद्भुत प्रयोग है तथा एक पूर्ण परीक्षित प्रयोग है। किसी भी महीना की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को लक्ष्मी नरसिंह की फोटो को पूर्व अथवा उत्तर दिशा में स्थापित करें। कलश स्थापना करें। तथा ऋण मुक्ति की कामना से श्रीनृसिंहपुराणोक्त ऋण मोचन नृसिंह स्तोत्रं का एक अयुत यानी की 10000 पाठ का संकल्प लें। भगवान नरसिंह के ऊपर हल्दी तथा सिंदूर अवश्य अर्पित करें। परिषेस में शीतल जल से उन्हें स्नान अवश्य करवाएं। नित्य 108 पाठ करें 100 दिन तक यह

क्रम जारी रखें अंतिम दिवस कर्मकांडी ब्राह्मण को भजन दीजिए। अवश्य ऋण मुक्ति हो जाता है। व्यक्ति सभी प्रकार के कर्ज से छूट जाता है। धन प्राप्ति की महान अवसर व्यक्ति को प्राप्त होने लग जाता है।

ॐ देवानां कार्यसिध्यर्थं सभास्तम्भसमुद्भवम्।
श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॥ १॥

लक्ष्म्यालिङ्गितवामाङ्गं भक्तानामभयप्रदम्।
श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॥ २॥

प्रह्लादवरदं श्रीशं दैतेश्वरविदारणम्।
श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॥ ३॥

स्मरणात्सर्वपापघ्नं कद्रुजं विषनाशनम् ।

श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॥ ४॥

अन्त्रमालाधरं शङ्खचक्राब्जायुधधारिणम् ।

श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॥ ५॥

सिंहनादेन महता दिग्दन्तिभयदायकम् ।

श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॥ ६॥

कोटिसूर्यप्रतीकाशमभिचारिकनाशनम् ।

श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॥ ७॥

वेदान्तवेद्यं यज्ञेशं ब्रह्मरुद्रादिसंस्तुतम् ।

श्रीनृसिंहं महावीरं नमामि ऋणमुक्तये ॐ ॥ ८॥

इदं यो पठते नित्यं ऋणमोचकसंज्ञकम् ।

अनृणीजायते सद्यो धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥ ९॥

॥ इति श्रीनृसिंहपुराणे ऋण मोचन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

लक्ष्मी दायिनी मातंगी दिव्य प्रयोग-: by 💖 Prakash Ji 💖

आदरणीय प्यारे मित्रों तथा गुरुजनों कल वैशाख महीना के शुक्ल पक्ष की तृतीय है । इसी दिन जाति भेद भाव से ऊपर उठकर सभी को भुक्ति तथा मुक्ति प्रदान करने हेतु ब्रह्मविद्या माता उमा मातंगी नामक महाविद्या के रूप में प्रकट हुए थे । अगर विस्तार से व्याख्या करने लग जाऊंगा तो बहुत बड़ा पोस्ट बन जाएगा इसलिए..... मातंगी जयंती की उपलक्ष में एक छोटा सा मातंगी प्रयोग दे रहा हूं इसको करके देखें बहुत प्रकार के लाभ प्राप्त होगा ।

वैशाख महीना की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि में सुबह स्नानादि से संपन्न होकर अच्छी तरह से भोजन खुद बनाएं । भोजन चावल का ही होना चाहिए । चावल ,दाल, अगर आपको और भी कोई सब्जी पकाना आता है तो उसे भी जरूर पकाएं । दाल चावल सब्जी और भी जो जो आप भोजन तैयार किए हैं वह तैयार हो जाने के बाद । या तो मूर्ति में कोई प्रतिमा में या फिर दो अखंड सुपारी लाकर उसे मतंगेश्वर भैरव और माता मातंगी मानकर उनका पूजा अर्चना करें । पूजार्चना करने से पहले एक बार ध्यान रखें आप जो सब्जी दाल चावल भोजन के रूप में तैयार किए हैं सभी में से एक-एक मुट्ठी आप खुद खा लीजिएगा.... और उसे झूठा मुंह में ही.... पूजन कीजिएगा...

पूजन के बाद.... नीचे दिए गए इस मंत्र का कम से कम एक माला जाप करें ।

दिव्य मंत्र-:

ओंग् ह्लींग् ह्लींग् ह्लींग् महा मातंगी प्रचिती दायिनी लक्ष्मी दायिनी नमो नमः ।

मंत्र जाप के पश्चात किसी चांडाल घर की कुंवारी कन्या जिसका शादी अभी तक ना हुआ हो , तथा हो श्याम वर्ण का हो, यानीकी शांवला हो , शिव भक्त अथवा देवी भक्त हो,ऐसे कन्या को बुलाईए..... अपने अंतर मन से संपूर्ण रूप से हीनभाव को त्याग करते हुए काय मन और वाक्य से उसे कुंवारी कन्या को साक्षात मां मातंगी समझिए । उस कुंवारी कन्या का भावना इस भांति करें की वह कुंवारी कन्या श्याम वर्ण, अर्द्ध चन्द्रधारिणी, तथा तीन नेत्र वाली है । और उसका दिखाई देने वाली दो हाथ है और अदृश्य में दो हाथ

है । चार हाथों में वह खड्ग, खेटक, पाश और अंकुश धारण किया हुआ है । इस प्रकार भावना करके उसे कुंवारी कन्या को उसके संतुष्टि होने तक भोजन दें। कुंवारी कन्या भोजन करते वक्त मानसिक रूप से "मातंगी प्रियतां में"इसका जाप करते रहें । उसके पश्चात कुंवारी कन्या को साष्टांग दंडवत करें । तथा यह कहे की जी पाप के कारण मैं भुक्ति तथा मुक्ति से दूर हूं.... हे माता आप मेरे वही पापों का निवारण करें । तथा मुझे भुक्ति तथा मुक्ति प्रदान करें । इसके पश्चात नित्य प्रतिदिन मां मातंगी का पूजन करते हुए .... नित्य प्रतिदिन इस मंत्र का एक माला जाप करें । समय-समय पर कम से कम महीने में एक बार किसी चांडाल घर की कुंवारी कन्या को संपूर्ण श्रद्धा भाव से भोजन वस्त्र आदि प्रदान करें । आप देखेंगे की आपके घर में कभी भी धन संपदा की कमी नहीं रहेगा हर

प्रकार की सुख सुविधा आपको मिलने लग जाएगा । ऋण रोग तथा दरिद्रता का संपूर्ण निवारण हो जाएगा ।

(इसका और भी एक मार्ग है पर हो अत्यंत जटिल होने के कारण यहां पर नहीं दिया । वहां पर कुमारी कन्या को साक्षात पूजन किया जाता है । वह भी तांत्रिक पद्धति से । नौबत यहां तक आ जाता है की कुंवारी कन्या के अंदर भगवती का प्रवेश तक हो जाता है । मांस मछली आदि का भोग लगता है तथा रात्रि कालीन पूजन किया जाता है ।)

जिसके मन में भी यह अहंकार है कि मुझसे बड़ा साधु पुरुष कोई नहीं है मुझसे बड़ा तपस्वी कोई नहीं है मुझसे बड़ा साधक कोई नहीं है , मुझसे बड़ा तांत्रिक कोई नहीं है मुझसे बड़ा मांत्रिक कोई

नहीं है मुझसे बड़ा यंत्र के ज्ञाता कोई नहीं है। अथवा अगर किसी के मन में यह अहंकार है कि मैं उच्च कुल में जन्म हुआ हूं मुझ में जो तेज है वह तेज किसी अन्य में नहीं है आदि आदि...... तो ऐसे व्यक्ति को एक मातंगी उपासक के साथ टकरा दीजिए । क्रोध में हो या फिर शांत भाव में हो मातंगी साधक के मुख से जो भी निकलेगा अक्षरस: सत्य होगा । प्रजापति ब्रह्मा में भी यह सामर्थ्य नहीं है कि मातंगी उपासक के वाक्य को मिथ्या कर दे । मातंगी उपासक बिना कोई मंत्र यंत्र जाने केवल अगर माता मातंगी का नित्य प्रतिदिन पुष्प धुप आदि से पूजन भी करता है तो इतने में भी माता मातंगी प्रसन्न हो जाते हैं । पर ध्यान देने योग्य बात यहां पर यह है की माता मातंगी का अनेक मंत्र ऐसे भी है जिसका प्रयोग देख-रेख कर करना चाहिए । यहां पर मैं जो मंत्र

दिया हूं यह कोई भी कर सकता है और संपूर्ण रूप
से हानि रहित है ।

🔱श्रीऋणहरण गणपति स्तोत्र अद्वितीय अचूक तथा अमोघ प्रयोग🔱

By ❤️ Prakash Ji ❤️

प्यारे मित्रों तथा गुरु जन ऋण हरण के लिए यह दिव्य स्तोत्र अपने आप में अद्भुत है और अमोघ है 👍 इस को सिद्ध करने के लिए किसी भी कृष्ण पक्ष की चतुर्थी की तिथि में पूर्व दिशा की ओर मुख करके भगवान गणेश के सम्मुख इसका 1008 पाठ करें। पूजन में लाल पुष्प अर्पित करना ना भूलें। अंत में उसी दिन बच्चों को मीठा चीज खिलाएं। गौमाता को पका हुआ केला दें। तिल के पांच लड्डू को पीसकर उसको जहां चिट्ठीओं के

बिल होता है उस बिल के आसपास डाल देकर चले आनाहे ।

उसके पश्चात नित्य प्रतिदिन सुबह के समय इसका 8 पाठ करते रहिए... इस प्रकार आपको 1 वर्ष तक करना होगा ..। 1 वर्ष तक इस प्रकार करने से आप सभी प्रकार के दरिद्रता से मुक्त हो जाएंगे ऋणवंधन,कर्जवंधन से मुक्त हो जाएंगे... और 1 वर्ष के अंदर ही दरिद्रता को भेदन करते हुए महा धनवान बन जाएंगे .... आप कुबेर तुल्य बन जाएंगे 👍👍👍 यह परम सत्य है ।

सवसे पहले ध्यान करें-:

ॐ सिन्दूर-वर्णं द्वि-भुजं गणेशं लम्बोदरं पद्म-दले निविष्टम्।ब्रह्मादि-देवैः परि-सेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं

प्रणामि देवम्।।

👉(भगवान श्री गणेश सिंदूर के वर्ण वाले अर्थात गाढ़ लाल वर्ण वाले के हैं .. उनका दो हाथ है उनका पेट थोड़ा सा लंवे है.. और भगवान गणेश कमल के ऊपर बैठे हैं... ब्रह्मा आदि देवता मिलकर उनका स्तुति गान कर रहे हैं और उनका पूजा अर्चना कर रहे हैं इस प्रकार ध्यान करना चाहिए)

अथ दिव्य स्तोत्र

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजित: फल-सिद्धये।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।१

त्रिपुरस्य वधात् पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।२

हिरण्य-कश्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।३

महिषस्य वधे देव्या गण-नाथः प्रपुजितः।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।४

तारकस्य वधात् पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।५

भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छवि-सिद्धये।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।६

शशिना कान्ति-वृद्धयर्थं पूजितो गण-नायकः।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।७

पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः।

सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे।।८

इदं त्वृण-हर-स्तोत्रं तीव्र-दारिद्र्य-नाशनं,

एक-वारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं सामहितः।

दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा कुबेर-समतां व्रजेत्।।

लग्न अनुसार आकस्मिक धन प्राप्तिकारक दिव्य प्रयोग👍

by 💖 Prakash Ji 💖

आदरणीय प्यारे मित्रों तथा गुरुजनों आज हम लग्न के अनुसार आकस्मिक धन प्राप्ति का कुछ दिव्य उपाय के बारे में जानेंगे। मैं यहां पर जो कुछ भी आप लोगों को बताऊंगा इनमें से जो भी आपका लग्न है उस लग्न के अनुसार अगर आप अपने उपाय करते रहेंगे तो आजीबन आकस्मिक धन आपको किसी न किसी रूप में प्राप्त होता रहेगा इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।

तो फिर चलिए प्रारंभ करते हैं........

1. मेष लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु मेष लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह कुमार कार्तिकेय की आराधना करें,(कुमार कार्तिकेय की महिला आराधना ना करें) । महिला कौमारी देवी की आराधना करें । इसके अलावा हनुमान जी का भी आराधना कर सकते हैं । आजीवन ऋण मोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करते रहें। ऐसा करने पर समय-समय पर मेष लग्न वाले जातक को आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

2.वृष लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु वृष लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह भगवान श्री राम का आराधना करें, शिव मंदिर यात्रा करें, भगवान शिव की राजराजेश्वर स्वरूप का दर्शन करें । भगवान शिव की राजराजेश्वर स्वरूप का आराधना करें। शिवलिंग के ऊपर गन्ने का रस डालें । इंद्रेश्वर महादेव का पूजन करें ।ऐसा करने पर समय-समय पर वृष लग्न वाले जातक को आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

3.मिथुन लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु मिथुन लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह माता महाकाली के शरण में जाएं । पुष्प से उन्हें सुसज्जित करें। समय-समय पर उन्हें नारियल कुष्मांड आदि भेंट

करें ।ऐसा करने पर समय-समय पर मिथुन लग्न वाले जातक को आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

4.कर्कट लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु कर्कट लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह आसपास में जहां प्रसिद्ध बली पीठ हो.... यानी कि वहां पर देवी को बलि चढ़ता हो... वहां पर जाकर देवी को पूजन सामग्री भेंट करें । पुष्प आदि देवी को प्रदान करें । नारियल कुष्मांड आदि भी भेंट कर सकते हैं । धन प्राप्ति की कामना करें ।ऐसा करने पर समय-समय पर कर्कट लग्न वाले जातक को आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

5.सिंह लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु सिंह लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह किसी ऐसे शिव मंदिर में यात्रा करें जहां पर पूर्ण वैदिक रीति से भगवान शिव का पूजार्चना होता हो । कोई ऐसा कर्मकांडी ब्राह्मण अथवा वैदिक ब्राह्मण जो शिव भक्त हो उन्हें भोजन कराएं । त्रिपुर भैरवी सहित श्री गुरु मूर्ति दक्षिणामूर्ति का पूजन करें । इसके अलावा भगवान विष्णु के वामन स्वरूप का भी पूजन कर सकते हैं । ऐसा करने पर सिंह लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

6.कन्या लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु कन्या लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह हनुमान जी का मंदिर दर्शन करें। हनुमान जी को बूंदी का लड्डू का भोग लगाएं। आजीवन ऋण मोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करें। भगवती आदिशक्ति माता उमा का अथवा किसी भी देवी प्रतिमा का सिंदूर अथवा कुमकुम से अभिषेक करें। यह कार्य आप घर में भी कर सकते हैं बहुत ही कम मुल्य में ... । ऐसा करने पर कन्या लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा।

7.तुला लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु तुला लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह माता दुर्गा का महालक्ष्मी स्वरूप

का पूजार्चना करें तथा दर्शन करें । दुर्गा मंदिर दर्शन करें । वहां पर देवी को सफेद पुष्प का हार अर्पित करें । दूध मिश्री आदि अर्पित करें । धन प्राप्ति की कामना करें ।ऐसा करने पर तुला लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

8.विछा लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु विछा लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह आसपास में जहां भी भगवान विष्णु का मंदिर हो अथवा भगवान कृष्ण का मंदिर हो वहां पर जाकर भगवान कृष्ण का अथवा भगवान विष्णु का दर्शन करें । तुलसी के पत्ते से भगवान विष्णु के लिए माला निर्माण करके भगवान विष्णु को अर्पित करें अथवा भगवान

कृष्ण को अर्पित करें । धन प्राप्ति की कामना करें ।ऐसा करने पर विछा लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

9.धनु लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु धनु लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह किसी शिव मंदिर में जाकर वहां पर माता पार्वती को सफेद पुष्प की माला अर्पित करें । अक्षत अर्पित करें । श्वेत चंदन मिश्रित जल से माता को अभिषिक करें (साधारण रीति से) । धन प्राप्ति की कामना करें ।अगर इतना भी नहीं कर पाएंगे तो कम से कम हफ्ते में एक बार जहां पर भी शिवालय हो वहां पर जाकर माता पार्वती का श्री चरण का दर्शन अवश्य करें ।ऐसा करने पर

धनु लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

10.मकर लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु मकर लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह शिव मंदिरों का यात्रा करें । शिव मंदिर में संध्या काल में दीप प्रज्वलन अवश्य करें । शिवालय में नारियल अर्पित करें । संभव हो सके तो भगवान शिव के ऊपर बेलपत्र अवश्य अर्पित करें ।धन प्राप्ति की कामना करें । ऐसा करने पर मकर लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

11.कुंभ लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु कुंभ लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह भगवान विष्णु के मंदिरों का दर्शन करें । विष्णु मंदिर के अभाव में कृष्ण मंदिर का भी दर्शन कर सकते हैं । भगवान विष्णु अथवा भगवान कृष्ण को तुलसी के पत्ते से तैयार हुआ माला चढ़ाना ना भूलें।ऐसा करने पर कुंभ लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

12.मिन लग्न-:

आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु मिन लग्न वाला जातक को चाहिए कि वह भगवती विष्णुपत्नी लक्ष्मी का मंदिरों का दर्शन करें। माता लक्ष्मी तथा उनके अवतार जैसे कि रुक्मणी, सिता आदि को

श्वेत पुष्पों की माला अर्पित करें। दूध तथा मिश्री का भोग लगाएं। इसके अलावा भगवती माता दुर्गा का जहां पर शांत स्वभाव वाली मूर्ति स्थापित की गई है इस मूर्ति का दर्शन करने के लिए जाएं । उन्हें सफेद पुष्प से बनी माला अर्पित करें । दूध तथा मिश्री का भोग लगाएं।धन प्राप्ति की कामना करें । ऐसा करने पर मिन लग्न जातव्यक्ति को निश्चित रूप से समय-समय पर आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा ।

जिनको अपना जन्म लग्न पता नहीं है उन व्यक्ति विशेषों के लिए-:

इसके अलावा जिनको अपना जन्म लग्न का पता नहीं है उन्हें चाहिए कि वह नित्य संध्या काल में जाकर शिव मंदिर में दीप प्रज्वलन करें । अगर

संभव हो सके तो शिव तांडव स्तोत्र का पाठ करें । पाठ नहीं कर पा रहे हैं तो शिवालय में जाकर उसे श्रवण करें । और शिवालय में दीप प्रज्वलन करते वक्त नागराज बासुकी सहित नव नागों के नाम से एक दीपक प्रज्वलित करना ना भूलें । किसी दिन भी अगर गन्ने का रस मिले तो शिवलिंग में अवश्य अर्पित करें । किसी प्राचीन भैरव मंदिर अथवा भैरव की प्राचीन पीठ पर संध्या काल में जाकर दीप प्रज्वलन करें। वहां पर तिल का तेल युक्त दीपक प्रज्वलित करें । अगर इस जगह पर शराब चढ़ता है तो शराब चढ़ाएं अगर नहीं चढ़ता है तो एक कहां से की पत्र में नारियल का पानी डालकर उसमें एक जायफल मिला ले और उसे भैरव जी को अर्पित करें । आप देखेंगे की बहुत ही कम दिनों में आपको आकस्मिक धन प्राप्त होना शुरू हो जाएगा । जिनको अपना जन्म लग्न पता नहीं है

यहां पर मैं जो विधान बताया इस विधान को महीने में कभी कवार करते रहें। शिव तांडव स्तोत्र को नित्य करने का प्रयत्न करें अगर शिवालय में नहीं हो पा रहा है तो घर में बैठकर ही करें । जिनको अपना जन्म लग्न पता नहीं है अगर हो भी मैं यहां पर जो उपाय अभी बता रहा हूं इसको कर लें तो उन्हें जीवन में आकस्मिक धन प्राप्त होता रहेगा । यह निश्चित है ।

नमः शिवाय परमात्मने 🪔🦢

पितृदोष तथा ऋण रोग दरिद्रता आदि से मुक्ति हेतु एक सारभूत परामर्श-: by 💖 Prakash Ji 💖

अकारण क्रोध मत करो, क्रोध आता है तो उसे अपने अंदर ही मार डालो, उसे बाहर प्रकट होने ही मत दो.... ।या देवी सर्वभूतेषु शांति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ अर्थात जो देवी समस्त प्राणियों में शान्ति के रूप में निवास करते हैं, उनको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है। इस मंत्र का नित्य कम से कम एक माला जाप करना शुरू कर दें । गुरु गुरुजन पितृवर्ग आदि को सम्मान दें ।वहुत ज्यादा कामुक ना बनें । गृहस्त हैं तो संभोग आदि में 4 दिन का रिक्तता रखें । और सभी छोटी-छोटी बातों

को नजर अंदाज करें जिससे बात का बतंगड़ बन जाता हो । संभव हो तो अमावस्या तथा पुर्णिमा का व्रत हर महीने करें । कर्ज लेने से बचे । कर्ज ले ही चुके हैं तो... आपकी कुंडली के षष्ठेश-अष्टमेश-द्वादशेश कौन-कौन सा ग्रह हैं.... तथा उक्त बाप में कौन-कौन सा ग्रह बैठे हैं... इन सब को एकत्रिकरण करके क्लिष्ट विश्लेषण पूर्वक इष्टदेवता का निर्णय करें । और इस एक इष्ट देवता का जो कवच है उसे किसी सिद्धि योग में जितने बार बोला है उतने बार पाठ करके सिद्ध करें । शिवालय में रक्त बर्ण के फल सब्जी आदि का दान करें । रक्त वर्णों के त्रिकोणीय झंडा शिवालय में दें । महीने में एक बार कम से कम एक ब्राह्मण को भरपेट भोजन अवश्य करवाएं । इसके अलावा मंगल आदि ग्रहों को भी विचार में लेने योग्य बातें हैं...... । ऐसा करने पर निश्चित रूप से आप कर्ज

से मुक्त हो जाएंगे..... । जो उपाय कर्ज मुक्ति के लिए दिया गया वहीं उपाय रोग मुक्ति के लिए भी है । घर में नित्य प्रतिदिन या तो श्रीमद् भागवत गीता का पाठ करें या फिर ईश्वर गीता का पाठ करें या फिर शिव गीता का पाठ करें या फिर देवी गीत का पाठ करें या फिर गणेश गीता का पाठ करें या फिर सूर्य गीता का पाठ करें । वह पाठ चाहे नित्य प्रतिदिन एक अध्याय हो या फिर 10 श्लोक का ही क्यों ना हो । पीपल वृक्ष का सेवा करें बट वृक्ष का सेवा करें गौ माता का सेवा करें । कुत्ते और कौवा को भोजन दें । अपने कुलदेवता का पूजन करें ।शिवलिंग पर शुद्ध गंगाजल/तीर्थ जल तथा बेलपत्र अर्पित करें । शिवालय में,दही मधु घृत, काला तिल, नमक, चावल ,गेहूं, मूंग आदि महीने में एक बार कम से कम थोड़ा बहुत मात्रा में यथाशक्ति देते रहें । उपाय तो और भी बहुत है पर

इतनी मात्रा करने से भी आप पितृ दोष से तो मुक्त होंगे ही इसमें कोई संध्या नहीं है उसके साथ-साथ ऋण रोग तथा दरिद्रता से भी मुक्त हो जाएंगे ।

कर्ज मुक्ति का एक कठिन तथा अचूक प्रयोग-:

By 💖 Prakash Ji Shri Gurumurthysaranam 💖

मैं पहले से ही बता देता हूं कि यह प्रयोग उनको भाएगा जो या तो काशी में वास करते हैं या फिर काशी से कुछ ही दूरी पर जो निवास करते हैं । या फिर जो लाखों करोड़ों कर्ज में फंसे हुए हैं..... और इतनी मात्रा में कर्ज में फंसे हुए हैं कि अगर उस कर्ज की निवारण के लिए उन्हें काशी में डेढ़ साल रहना पड़े..... तो उसके लिए भी हो सज्ज हैं ।
अगर कोई ऐसे व्यक्ति विशेष हैं तो चाहे कितना भी कर्ज बढ़ गया हो लाखों की मात्रा में करोड़ों की मात्रा में कर्ज हो...... व्यक्ति को चाहिए कि वह काशी में महामृत्युंजय मंदिर मध्यमेश्वर गली के

पास बहुत ही प्राचीन और प्रत्यक्ष फलप्रद ऋणहरेश्वर मन्दिर स्थित है। वहां पर प्रत्यक्ष फलप्रद ऋण हरण करने वाले ऋणहरेश्वर महादेव विराजमान करते हैं।इनका सवा वर्ष तक प्रतिदिन दर्शन करने से और इनके सामने ऋणहर्ता गणेशस्तोत्रका प्रतिदिन ११ बार पाठ करने से निश्चित ही ऋण से मुक्ति हो जाती है इसमें किसी भी प्रकार की कोई संदेह का अवकाश नहीं है।

परम गोपनीय स्वर्ण आकर्षण भैरवप्रयोग (जीवन में इसका उपयोग यदि एक बार भी करेंगे तो संसार में कुबेर की तरह जीएंगे)-:

By ❤️ Prakash Ji ❤️

प्यारे मित्रों तथा गुरुजनों आने वाले महा भैरव अष्टमी के उत्सव के अवसर में मैं आप लोगों के सम्मुख एक अत्यंत दुर्लभ तथा चमत्कारी उपासना भेंट स्वरूप देने जा रहा हूं ।

उस दिव्यता से संपन्न तथा अत्यंत अचुक तथा अमोघ उपासना का नाम है "श्री स्वर्णाकिर्षण भैरव उपासना" ।

हम इस दिव्य उपासना को जान् ने से पूर्व सबसे पहले भगवान स्वर्णाकिर्षण भैरव कौन हैं उनका

संबंध में कुछ जानना बेहद आवश्यक है ।

तो मेरे प्यारे मित्रों और गुरुजनों हम यहां से चलते हैं रुद्रयामल तंत्र पे...। इस रुद्रयामल तंत्र पर भगवान स्वर्णाकर्षण की बारे में सविस्तार पूर्वक बताया गया है । इस तंत्र में भगवान स्वर्णाकर्षण के बारे में इस प्रकार बताया गया है की-:

एक बार महर्षि मार्कंडेय जी ने भगवान शिव के वाहन नंदी जी से यह पूछा कि... हे धर्म के अवतार नंदी जी.. जब कुंडली में धन भाव का संबंध किसी क्रूर ग्रहों से हो जाता है, कुंडली में महा दारिद्र्य योग बन जाता है... या फिर कुंडली में धन का योग ही ना हो.. प्रारव्ध पाप कर्म के कारण.. प्राणी दरिद्रता का जीवन जीता हो..., व्यक्ति के जीवन में दुर्भाग्य ही दुर्भाग्य हो..., व्यक्ति ऋण वोझ(कर्ज)में डूबा हुआ हो .., चारों ओर से शत्रुओं

से घिरा हो , व्यक्ति जिस कार्य में हाथ डाले उस कार्य असंपूर्ण ही रहता हो, लक्ष्मी कुबेर और भी जितने देवता हें... वह सभी देवी देवताओं का अनुष्ठान ,व्रत, करने के पश्चात भी व्यक्ति के जीवन में केवल दरिद्रता ही दरिद्रता हो..., व्यक्ति के घर में लक्ष्मी देवी का स्थाई बास ना हो.., अनेक मंदिरों में जाकर माथा टेकने पर भी... परमेश्वर को हृदय से रो-रो कर अपने मन की व्यथा बताने पर भी व्यक्ति के जीवन में अलक्ष्मी, दुर्भाग्य, दरिद्रता, ऋण(कर्ज), रोग, तथा दारिद्र्यता असंपन्नता पारिवारिक अशांति, आदि स्थाई रूप में वास करने लगे तो... तथा भाग्य में यदि धन संपदाही ना हो...

दुर्भाग्य व्यक्ति का पीछा ना छोड़ रहा हो... तो ऐसे परिस्थिति में... प्राणि जीवंत होकर भी मृतप्राय है ।

यानी कि "व्यक्ति मन ही मन यह सोचने लगता है कि ईश्वर तू मुझे मृत्यु ही दे दे यही ही मेरे लिए सही रहेगा ।"

महर्षि मार्कंडेय नंदी जी से बोले-:"है परमेश्वर के बाहन स्वयं धर्म के अवतार भगवान नंदी ऐसे प्राणियों के हित के लिए ऐसे व्यक्तियों के हित के लिए कृपया मार्गदर्शन करें ।"

महर्षि मार्कंडेय जी के बात सुनकर भगवान नंदी जी की आंखों में आंसु आ गया । भगवान नंदी मार्कंडेय जी से बोले-: हे महर्षियों में श्रेष्ठ मार्कंडेय जी एक बार में संसार की प्राणियों के दुख देखकर तथा उनका आर्थिक परिस्थितियों की जटिलता को देखकर भगवान आशुतोष शंकर जी से प्रश्न किया था कि-"" हे भगवान शंकर कुछ ऐसे उपाय

बताइए जिसके द्वारा जगत का कल्याण हो सके-:
निर्धन से भी निर्धन व्यक्ति धनवान हो जाए,
भाग्यहीन पुरुष भी सौभाग्य को प्राप्त कर सकें,
ऋण(कर्ज़)रोग दारिद्र्यता.. प्राणी के जीवन से
संपूर्ण रूप से नष्ट हो जाए । एक ऐसे उपाय
जिसको करने मात्र से नवग्रह अत्यंत प्रसन्न हो
जाएं । मंगल तथा राहु ग्रह की दोष/कुप्रभाव संपूर्ण
रूप से नष्ट हो जाए । कुंडली स्थित महा दारिद्र्य
योग का विनाश हो जाए । शत्रुओं का सर्वनाश हो
जाए । व्यक्ति कुबेर तुल्य धनबान हो जाए ।

व्यक्ति धर्म अर्थ काम और अंत में मोक्ष को भी
प्राप्त कर सके । व्यक्ति का हर मनोकामना पूर्ण
हो जाए...।""

धर्म के अवतार नंदी जी की बात सुनकर भगवान
शंकर जी बोले हे नंदी जगत के कल्याण के लिए

मैं तुम्हारे सम्मुख अत्यंत गोपनीय रहस्य को उन्मुक्त कर रहा हूं..। मैं तुम्हारे कहने पर इसीलिए इस गोपनीय रहस्य को उन्मुक्त कर रहा हूं..क्योंकि तुम पूर्वकाल में धर्म देवता थे ।मेरे (परमेश्वर के साथ) साथ रहने के लिए तुमने कठिन तपस्या की थी । तुम्हारी तपस्या में प्रसन्न होकर मैं तुम्हें अपने वाहन के रूप में स्वीकार किया था । तुम धर्म हो तुम्हारे दिव्य शक्ति का प्रभाव से व्यक्ति को अर्थ काम और मोक्ष के तीनों प्राप्त होते हैं .. इसीलिए हे धर्म के अवतार नंदी आज में दिव्यताओं में सर्वश्रेष्ठ अत्यंत गोपनीय। ""चारों युगों में स्वयं सिद्ध लक्ष्मी कुबेर भि जिनका उपाशीका और उपासक हैं बह बटुक भैरव के धनदायक रूप स्वर्णाकर्षण भैरव "" के बारे में बता रहा हूं ।

हे नंदी एक बार देव और असुर के मध्य युद्ध छिड़ गया । युद्ध १०० वर्षों तक चलता रहा । युद्ध में अस्त्र निर्माण कार्य में तथा अन्यान्य कार्य में जितना भी स्वर्ण तथा धन आवश्यक पड़ताथा वह सब कुबेर जी ने अपने धनभंडार से लाकर देवताओं के हित के लिए दे देते थे और जब उनका धनभंडार सुन्यहोजाता था तब हो माता लक्ष्मी के पास जाकर उनसे धन मांग लेते थे और माता लक्ष्मी अपने धन भंडार से कुबेर जी को प्रचुर मात्रा में स्वर्ण धन इत्यादि प्रदान करते थे ।

इस महान देवासुर संग्राम में देवताओं अवश्य विजय हुए पर उनके सारे धन संपदा जोकि यक्ष्यपतिकुबेर के पास था वह सब खत्म हो गया । इसीलिए देवताओं धन संपदा से रहित हो गए और उन्होंने भगवान नारायण और माता लक्ष्मी के शरण में गए । माता लक्ष्मी जब अपना भंडार देखें तो

उनका भंडार भी स्वर्ण से रिक्त था यानी कि उनका भी सारी धनसंपदा देवासुर संग्राम में खत्म हो चुका था ।

अब देवताओं ,यक्ष पति कुबेर और माता लक्ष्मी तीनों हाथ जोड़कर विनम्रता पूर्वक भगवान नारायण को इस समस्या का समाधान हेतु मार्गदर्शन करने के लिए निवेदन करने लगे ।

भगवान नारायण वोले हे देवी लक्ष्मी और यक्षपति कुबेर आप लोग वर्तमान कैलाश चले जाइए और भगवान उमापति महादेव के शरण में चले जाइए । भगवान नारायण की बात मानकर भगवती लक्ष्मी और यक्षपती कुबेर ने कैलाश पर आकर महादेव के शरण में गये। परमेश्वर भगवान शिव ने भगवती लक्ष्मी और कुबेर महाराज को वोले की हे देवी लक्ष्मी और धनपति कुबेर.. मुझे तुम्हारे और

देवताओं की दुर्दशा ज्ञात है । इस महा संकट से उधार प्राप्त करने हेतु तथा सब प्रकार के धनसंपदा की पुनः प्राप्ति हेतु आप लोग परमेश्वरी लोक यानी की मणिद्विप में स्थित मेंरे ही दिव्यअंश.. स्वर्णाकर्षण भैरव के शरण में जाओ । माता लक्ष्मी और कुबेर जी ने भगवान महादेव से बोली कि हे प्रभु यह भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव कौन है ...? दयालु में श्रेष्ठ भगवान महादेव वोले हे देवी लक्ष्मी और यक्षपति कुबेर यद्यपि संसार के कल्याण हेतु मैं निराकार पुरुष यानी कि परमात्मा साकार महादेव का स्वरूप धारण किया हूं और मेरा शक्ति परमेश्वरी साकार रूप पार्वती का रूप धारण किये हुए हैं...."फिर भी हम दोनों (शिव शक्ति)निराकार तत्वमे मणिद्विप में बास करते हैं...। वहां पर सब कुछ है । वहां पर पूरे 14 कोटि ब्रह्मांड का समस्त

धन संपदा अक्षय रूप में विद्यमान है । उसका रक्षक स्वर्णाकर्षण भैरव हैं ।

इसीलिए आप दोनों अविलंबित किसी एक पवित्र स्थान पर जाकर उन परम तेजस्वी श्री स्वर्णाकर्षण भैरव की उपासना में तपस्या में संलग्न हो जाओ । भगवान शंकर जी की बात श्रवण करके माता लक्ष्मी और कुबेर महाराज जी पवित्र स्थान विशाल तीर्थ(बद्री विशाल धाम) पे जाकर

भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव की कठोर तपस्या करने लगे और उनके अनेक बर्षों के कठोर तपस्या के बाद श्री स्वर्णाकर्षण भैरव उन्हें दर्शन नहीं दिये । तब व्याकुल चित्त से भगवती लक्ष्मी और धनपति कुबेर जी भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव की स्तुति गान करने लगे... अपने सब कुछ भगवान श्री स्वर्णाकर्षण भैरव को अर्पित कर दी.. उनका स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव जी

भगवती लक्ष्मी देवी और धनपति कुबेर जी महाराज को दर्शन दिए । अर् उन्हें अक्षय धनसंपदा प्राप्ति का वरदान दिया । भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव के प्रसाद से भगवती लक्ष्मी और धनपति कुबेर पुनः धन संपदा और अखियां स्वर्ण भंडार से युक्त हो गए । भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव भगवती लक्ष्मी और कुबेर जी से बोले -: """हे देवी लक्ष्मी और फिर धनपति कुबेर आप दोनों ने मेरा कठोर तपस्या की है । इसलिए यदि तुम्हारे मन में और कुछ इच्छा हो तो प्रकट करो मैं अवश्य पूर्ण करूंगा । तब माता लक्ष्मी और कुबेर जी बोले हे भगवान हमें इससे अधिक और कुछ नहीं चाहिए प्रभु...। यदि आपका इच्छा हो तो जगत कल्याण के लिए हम कुछ मांगे ।"""भगवान स्वर्णाकर्षण बोले तुम दोनों जगत कल्याण के लिए कुछ मांगना चाहते हो मुझे तुम दोनों और भी प्रशन्न कर दिए मांगो जो

भी इच्छा वरदान मांगो...। भगवती लक्ष्मी और कुबेर जी बोले हे प्रभु भगवान शिव को गुरु मानकर हम आपका जिस मंत्र का जाप कर रहे थे यानी कि जिस मंत्र के द्वारा आप हम पर प्रसन्न हुए उस मंत्र का यदि कोई भी प्राणी जाप करेगा... हो दूर्भगा पुरुष होने के बावजूद भी, उसकी विधि बाम होने के पश्चात भी.. उसका जीवन में उसका भाग्य में दरिद्र होना लिखा हुआ है...तोभि.... प्राणी द्वितीय कुबेर और द्वितीय लक्ष्मी बन जाएं । उनका जीवन धन संपदा से परिपूर्ण हो उठे । धर्म अर्थ काम और मोक्ष उन्हें प्राप्त हो । शत्रु का विनाश हो । और जिस स्तोत्रत् के द्वारा हम दोनों आपको प्रशन्न किए हैं उस स्तोत्र का जो भी प्रतिदिन पाठ करेगा उससे दरिद्रता, ऋण, रोग, अलक्ष्मी, दुर्भाग्य, 100 कोस दूर रहैं । यही जी आपसे हम दोनों वरदान केरूप में मांगते हैं । जोभि आप का

मंत्र और स्तोत्र का नित्य प्रतिदिन पवित्रता पूर्वक जप और पाठ करें... आप उसको आपका प्रत्यक्ष आशीर्वाद प्रदान करेंगे । आपके कृपा उसके ऊपर हमेशा बना रहेगा । यही ही हम वरदान के स्वरुप में मांगते हैं ।

भगवती लक्ष्मी और कुबेर जी के वार्ता को श्रवण करके भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव अत्यंत प्रसन्न हो गए और उन्हें "तथास्तु "कहकर भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव मणिद्वीपमे चले गए ।

इस महागाथा को श्रवण करके मार्कंडेय जी धर्म की अवस्था नंदी जी को बोले-हे धर्मावतार नंदी जी जगत के कल्याण के लिए कृपया उस भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव के दिव्य मंत्र और दिव्य स्तोत्र को प्रकाश कीजिए ।

और जगत के कल्याण के लिए महर्षि मार्कंडेय जी के अनुरोध पर धर्म अवतार नंदी जी ने महर्षि मार्कंडेय जी के सम्मुख उस दिव्य मंत्र और उस दिव्य स्तोत्र को प्रकट किये ।

प्यारे मित्रों तथा गुरुजनों मेरा सौभाग्य है कि मैं आप लोगों के समक्ष यह गोपनीय विद्या को प्रकट किया ।

साधना विधि-: इस दिव्य साधना को किसी भी अष्टमी तिथि से या फिर शुक्ला पक्ष की मंगलवार से शुरू कर सकते हैं ।

स्नानादि सन्ध्या से निवृत्त होकर प्राणायामत्रय करके भगवान श्रीभैरव का अधोलिखित

विधि से पूजन अर्चन करे। अनुष्ठान काल में पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे

और पूर्ण भक्ति भाव से भगवान् श्रीभैरव का सतत भावना(ध्यान) करता रहे। सर्व प्रथम किसी चौकी या पाटे पर सिन्दूर या रोली से अधोलिखित त्रिकोण बनाकर लिखे अनुसार त्रिकोण के ऊपरी कोण पर ॐ तथा बाँये कोण पर कुँ और दाहिने कोण पर वें तथा मध्य में ह्रीं बीज लिखे। ह्रीं बीजके सामने एक दीपक प्रज्वलित करके रखें। उस दीपक पर ही सङ्कल्प, न्यास, ध्यानआवाहनादि से विधिवत पूजन करे। यन्त्र के पास उडद से सरसों के तेल में बने बिना नमक के बड़े, दाहिने कोण पर सिन्दूर मिश्रित दही तथा बाँये कोण पर गुण रखें। थोडासा अलग साफ बड़ा, गुड़ और दही रखें रहे, भैरव के भोग में सरसों के तेल से बने ।

प्यारे मित्रों तथा गुरुजनों सबसे पहली संकल्प करने को ना भूले ।

सङ्कल्पः-हरिः ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः
श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्यविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य
अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे
श्रीश्वेतवाराह-

कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे
कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोकेभारतवर्षे
भरतखण्डे आर्यावर्तेकदेशे (अविमुक्त
वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटक
विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके
बौद्धावतारे--नामसंवत्सरे---ऋतौ महामाङ्गल्यप्रद
मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्र-मासे-मासे -पक्षे --
तिथौ--- -वासरे --नक्षत्रे-

--योगे-----करणे--राशिस्थितेचन्द्रे-----
राशिस्थितेश्रीसूर्ये-----राशिस्थितेश्रीदेवगुरौ
शेषेषुग्रहेषु यथा

यथाराशिस्थानस्थितेषुसत्सुएवंग्रहगुणगणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्र:-------प्रवर:-----शर्मा नामाऽहंस्थिरअष्टलक्ष्मीप्राप्त्यर्थंश्रीस्वर्णाकर्षणमहा भैरव प्रीत्यर्थंश्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्र जपं करिष्ये।

(यदि आप संस्कृत में संकल्प नहीं ले सकता है तो अपनी ही भाषा में भगवान श्री स्वर्णाकर्षण भैरव को यह बोलेगी हे प्रभु स्वर्णाकर्षण भैरव मैं जंबूद्वीप भारत खंड का रहने वाला हूं ।मैंअमुक नामधारी अमुक गोत्र का हूं। मेरा पिता का नाम अमुक है और माता का नाम अमुक है । हे प्रभु मैं आपके अमोघ आशीर्वाद प्राप्ति हेतु तथा मेरा मनोकामना पूर्ण हेतु 41 दिन तक आपका यह मंत्र व स्तोत्र का अनुष्ठान करूंगा हे प्रभु मैं जो यह

अनुष्ठान करूंगा इसका फल मुझे शद्य प्राप्त हो..
तथा आपका कृपा दृष्टि हमेशा मेरे ऊपर बना रहे मैं
काया मन और वाक्य से आप की शरण में हूं..)

संकल्प लेने के बाद आपको भगवान स्वर्णाकर्षण
भैरव का पंचोपचार से पूजन करना है । भक्ति
भाव से भगवान को पंचोपचार से पूजन करें ।

अथ ध्यानम् -

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम् ।

अक्ष्यं स्वर्णमाणिक्यं-तडितपूरित पात्रकम् ॥

अभिलषितं महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम् ।

सर्वाभरणसम्पन्नं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥१॥

मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानाम् च वर प्रदम् ।

सततं चिन्तये द्देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम् ॥

पारिजात द्रुम कान्तारे स्थिते माणिक्यमण्डपे

सिंहासन गतं वन्दे भैरवं स्वर्णदायकं

गाङ्गेय पात्रं डमरूं त्रिशूलं वरं करः सन्दधतं त्रिनेत्रं

देव्यायुतं तप्तस्वर्णवर्ण स्वर्णाकर्षणभैरवमाश्रयामि ॥

श्री गणेश और गुरुदेव का स्मरण करके माता गौरी का स्मरण करके पंचदेव का स्मरण करके तथाभगवान स्वर्णाकिर्षण भैरव के ध्यान करने के बाद मंत्र का तीन माला जाप करना चाहिए । और स्तोत्र का 10 बार पाठ करना चाहिए ।

मंत्र सिद्धि विधानम-: 41 दिन तक उत्तर दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र की तीन या फिर पांच

माला का नित्य जाप करें। 41 दिन के बाद 7 दिन के अंदर इसका दशांश हवन करें। फिर हवन का दशांश तर्पण करें और तर्पण के दशांश मार्जन करें।

जो यह सब नहीं कर पाएंगे उनके लिए मेरा एक परामर्श है

हो इस मंत्र का केवल तीन माला प्रतिदिन जाप करें। 41 दिन के बाद चमत्कार उनका सामने होगा।

मन्त्रस्य विनियोग: - ॐ अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्ति छन्दः हरिहरब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण

भैरवो देवता, ह्रीं बीजम्, सः शक्ति ॐ कीलकम् ममदारिद्र्यनाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्त्यर्थे

स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

मूलमन्त्रम्-ॐ ऐं क्लां क्लीं क्लू ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्र्यविद्वेषणाय ॐह्रीं महाभैरवाय नमः।

स्तोत्र प्रयोग-:यह दिव्य स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्र अत्यंत दिव्य है तथा तंत्र चमत्कारिक भी । प्रतिदिन उत्तर दिशा की ओर मुख करके इस का 10 बार पाठ एक 40 दिन तक करने से यहा स्तोत्रसिद्ध हो जाता है । भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव के मंत्र जाप के पश्चात स्तोत्र का 10 बार प्रतिदिन पाठ करना चाहिए ।

स्तोत्र का पाठ करने वाला उपासक का स्वयं स्वर्णाकिर्षण भैरव गुरु बन जाते हैं। और उपासक का मार्गदर्शन भी करते हैं। इससे ही स्तोत्र का दिव्यता का परिचय मिल जाता है।बिना स्तोत्र कि यदि मंत्र भी जॉब करोगे तो किसी प्रकार का फल प्राप्त नहीं होगा।

अथ स्तोत्रम-:

ॐ नमस्ते भैरवाय ब्रह्मविष्णुशिवात्मने।

नमस्त्रैलोक्य वन्ध्याय वरदाय वरात्मने॥ १॥

रत्नसिंहासनस्थाय दिव्याभरण शोभिने।

दिव्यमाल्यविभूषाय नमस्ते दिव्यमूर्तये॥ २॥

नमस्तेऽनेक हस्ताय अनेक शिरसे नमः।

नमस्तेऽनेक नेत्राय अनेक विभवे नमः ॥ ३॥

नमस्तेऽनेक कण्ठाय अनेकांसाय ते नमः ।
नमस्तेऽनेक पार्श्वाय नमस्ते दिव्य तेजसे ॥ ४॥

अनेकायुध युक्ताय अनेक सुर सेविने ।
अनेक गुण युक्ताय महादेवाय ते नमः ॥ ५॥

नमो दारिद्र्यकालाय महासम्पद्प्रदायिने ।
श्रीभैरवी संयुक्ताय त्रिलोकेशाय ते नमः ॥ ६॥

दिगम्बर नमस्तुभ्यं दिव्याङ्गाय नमो नमः ।
नमोऽस्तु दैत्यकालाय पापकालाय ते नमः ॥ ७॥

सर्वज्ञाय नमस्तुभ्यं नमस्ते दिव्यचक्षुषे ।

अजिताय नमस्तुभ्यं जितमित्राय ते नमः ॥ ८॥

नमस्ते रुद्ररूपाय महावीराय ते नमः ।

नमोऽस्त्वनन्तवीर्याय महाघोराय ते नमः ॥ ९॥

नमस्ते घोरघोराय विश्वघोराय ते नमः ।

नमः उग्राय शान्ताय भक्तानां शान्तिदायिने ॥ १०॥

गुरवे सर्वलोकानां नमः प्रणवरूपिणे ।

नमस्ते वाग्भवाख्याय दीर्घकामाय ते नमः ॥ ११॥

नमस्ते कामराजाय योषितकामाय ते नमः ।

दीर्घमायास्वरूपाय महामायाय ते नमः ॥ १२॥

सृष्टिमायास्वरूपाय निसर्गसमयाय ते ।
सुरलोकसुपूज्याय आपदुद्धारणाय च ॥ १३॥

नमो नमो भैरवाय महादारिद्र्यनाशिने ।
उन्मूलने कर्मठाय अलक्ष्म्याः सर्वदा नमः ॥ १४॥

नमो अजामलवद्धाय नमो लोकेश्वराय ते ।
स्वर्णाकर्षणशीलाय भैरवाय नमो नमः ॥ १५॥

मम दारिद्र्य विद्वेषणाय लक्ष्याय ते नमः ।
नमो लोकत्रयेशाय स्वानन्दं निहिताय ते ॥ १६॥

नमः श्रीबीजरूपाय सर्वकामप्रदायिने ।

नमो महाभैरवाय श्रीभैरव नमो नमः ॥ १७॥

धनाध्यक्ष नमस्तुभ्यं शरण्याय नमो नमः ।
नमः प्रसन्न आदिदेवाय ते नमः ॥ १८॥

नमस्ते मन्त्ररूपाय नमस्ते मन्त्ररूपिणे ।
नमस्ते स्वर्णरूपाय सुवर्णाय नमो नमः ॥ १९॥

नमः सुवर्णवर्णाय महापुण्याय ते नमः ।
नमः शुद्धाय बुद्धाय नमः संसारतारिणे ॥ २०॥

नमो देवाय गुह्याय प्रचलाय नमो नमः ।
नमस्ते बालरूपाय परेषां बलनाशिने ॥ २१॥

नमस्ते स्वर्ण संस्थाय नमो भूतलवासिने ।

नमः पातालवासाय अनाधाराय ते नमः ॥ २२॥

नमो नमस्ते शान्ताय अनन्ताय नमो नमः ।

द्विभुजाय नमस्तुभ्यं भुजत्रयसुशोभिने ॥ २३॥

नमोऽनमादि सिद्धाय स्वर्णहस्ताय ते नमः ।

पूर्णचन्द्रप्रतीकाश वदनाम्भोजशोभिने ॥ २४॥

नमस्तेऽस्तुस्वरूपाय स्वर्णालङ्कारशोभिने ।

नमः स्वर्णाकर्षणाय स्वर्णाभाय नमो नमः ॥ २५॥

नमस्ते स्वर्णकण्ठाय स्वर्णाभाम्बरधारिणे ।

स्वर्णसिंहानस्थाय स्वर्णपादाय ते नमः ॥ २६॥

नमः स्वर्णभपादाय स्वर्णकाञ्चीसुशोभिने ।

नमस्ते स्वर्णजङ्घाय भक्तकामदुधात्मने ॥ २७॥

नमस्ते स्वर्णभक्ताय कल्पवृक्षस्वरूपिणे ।

चिन्तामणिस्वरूपाय नमो ब्रह्मादिसेविने ॥ २८॥

कल्पद्रुमाधः संस्थाय बहुस्वर्णप्रदायिने ।

नमो हेमाकर्षणाय भैरवाय नमो नमः ॥ २९॥

स्तवेनानेन सन्तुष्टो भव लोकेश भैरव ।

पश्य मां करुणादृष्ट्या शरणागतवत्सल ॥ ३०॥

श्री महाभैरवस्येदं स्तोत्रमुक्तं सुदुर्लभम् ।

मन्त्रात्मकं महापुण्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥ ३१॥

यः पठेन्नित्यमेकाग्रं पातकै स प्रमुच्यते ।
लभते महतीं लक्ष्मीमष्टैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥ ३२॥

चिन्तामणिमवाप्नोति धेनु कल्पतरुं ध्रुवम् ।
स्वर्ण राशिमवाप्नोति शीघ्नमेव न संशयः ॥ ३३॥

त्रिसन्ध्यं यः पठेत्स्तोत्रं दशावृत्या नरोत्तमः ।
स्वप्ने श्री भैरवस्तस्य साक्षाद्भूत्वा जगद्गुरुः ॥ ३४॥

स्वर्णराशि ददात्यस्यै तत्क्षणं नात्र संशयः ।
अष्टावृत्या पठेत् यस्तु सन्ध्यायां वा नरोत्तमम् ॥
३५॥

लभते सकलान् कामान् सप्ताहान्नात्र संशयः ।
सर्वदः यः पठेस्तोत्रं भैरवस्य महात्मनाः ॥ ३६॥

लोकत्रयं वशीकुर्यादचलां लक्ष्मीमवाप्नुयात् ।
नभयं विद्यते क्वापि विषभूतादि सम्भवम् ॥ ३७॥

म्रियते शत्रवस्तस्य अलक्ष्मी नाशमाप्नुयात् ।
अक्षयं लभते सौख्यं सर्वदा मानवोत्तमः ॥ ३८॥

अष्ट पञ्चाद्वर्णाढ्यो मन्त्रराजः प्रकीर्तितः ।
दारिद्र्य दुःखशमनः व स्वर्णाकर्षण कारकः ॥ ३९॥

य एन सञ्चयेद्धीमान् स्तोत्रं वा प्रपठेत् सदा ।

महा भैरव सायुज्यं स अन्तकालेलभेद् ध्रुवम् ॥
४०॥

इति रुद्रयामलतन्त्रे स्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥

प्यारे मित्रों तथा गुरुजनों अधिक क्या कहूं इस
दिव्य मंत्र और इस दिव्य स्तोत्र का लाभ उठाइए ।

By ❤️ Prakash Ji ❤️

अपव्यवहार के भय से केवल ही केवल लौकिक
प्रयोग ही दिया गया है.. । यहां पर जितना भी
दिया गया है यदि कोई उतना ही करें उसको
धनवान बनने से कोई भी नहीं रोक सकता ।

ॐ
ह्रीं
क्रें
वं
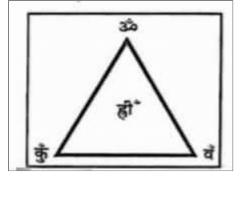
ईदं श्री गुरू मूर्तये श्री
दक्षिणामूर्तये नमः 🔱

By 💖 Prakash Ji 💖